विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग नवम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: -३१/०८/२०२०(एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-दशम: पाठनाम जटायो: शौर्यम्

श्लोक१. सा तदा करुणा वाचो विलपन्ती सुदु:खिता।

वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्शायतलोचना।।

अन्वय:-तदा करुणा वाच: विलपन्ती सुदु:खिता आयतलोचना सा (सीता)वनस्पतिगतं गृध्रं ददर्श ।

शब्दार्था:-

तदा- तब , करुणावाचो -दु:ख भरी आवाज से , विलपन्ती - रोती हुई

सुदु:खिता – बहुत दुखी , गृध्रम्- गिद्ध को ,ददर्श – देखा ,

वनस्पतिगतं – वृक्ष पर बैठे हुए को , आयतलोचना – बड़ -बड़ी आंखों वाली

अर्थ- तब करुण वाणी में रोती हुई, बहुत दुखी और बड़ी -बडी आंखों वाली (सीता) ने वृक्ष पर स्थित गिद्ध(जटायु) को देखा ।

श्लोक२. जटायो पश्य मामार्य ह्रियमाणामनाथवत् ।

अनेन राक्षसेन्द्रेण करुणं पापकर्मणा ।।

अन्वय:- आर्य जटायो अनेन पापकर्मणा राक्षसेन्द्रेण अनाथवत् ह्रियमाणाम् ,सकरुणम् माम् पश्य ।

शब्दार्था:- पश्य -देखो ,माम् -मुझे (मुझको), आर्य -श्रेष्ठ ,जटायो- हे जटायु

ह्रियमाणाम् – हरण की जाती हुई, अनाथवत् -अनाथ की तरह, अनेन – इस(से) ,

राक्षसेन्द्रेण -राक्षसराज के द्वारा ,करुणं – दु:खी , पापकर्मणा -पापकर्म वाले

अर्थ-हे आर्य जटायु ! इस पाप कर्म करने वाले राक्षसराज रावण के द्वारा अनाथ की तरह हरण की जाती हुई मुझ दु:खी को देखो।